अध्याय-5 राजस्थानी चित्रकला एवं लोककलां

☛ 1260 में चित्रित ग्रंथ 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' किस चित्रशैली से सम्बंधित रहा है?

(1) मेवाड़ (2) मारवाड़

(3) ढुंढाडा (4) हाड़ौती (1)

व्याख्या–1260 ई. का 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णी' नामक चित्रित ग्रंथ मेवाड़ शैली का प्रथम चित्र है जो कि तेज सिंह के राज्यकाल में चित्रित हुआ।

☛ निम्न में से कौन-सा राजस्थान में सर्वाधिक प्राचीन उपलब्ध चित्रित ग्रंथ (1060 ई.) है, जो जैसलेमर भण्डार से मिले है?

A. ओध निर्युक्ति वृति

B. दस वैकालीका सूत्र चूर्णी

C. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी

(1) केवल A (2) केवल B

(3) A व B दोनों (4) A व C (3)

☛ राजस्थान में कहां से गुफाओं (शैलाश्रयों) में आदिमानव द्वारा बनाए गये रेखांकन (चित्र) देखने को मिले?

(1) आलनिया, दर्रा (कोटा)

(2) बैराठ (जयपुर)

(3) दर (भरतपुर)

(4) उपरोक्त सभी (4)

व्याख्या–ध्यान रहे–*वी.एस. वाकणकर ने राजस्थान में कोटा में चम्बल घाटी व दर्रा, झालावाड़ में कालीसिंध घाटी, अरावली में माउंट आबू तथा ईड़र से चित्रित शैलाश्रयों की खोज की।*

☛ 1916 में राजस्थानी चित्रकाल का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन आनंद कुमार स्वामी ने कौन-सी पुस्तक में प्रस्तुत किया?

(1) राजपूत पेंटिंग (2) राजपूताना पेंटिंग्स

(3) मारवाड़ पेंटिंग्स (4) मेवाड़ पेंटिंग्स (1)

व्याख्या–विशुद्ध राजस्थान चित्रकला का जन्म 1500 ई. के आस-पास हुआ। राजस्थानी चित्रकला पर प्रारंभ में जैन, गुजरात व अपभ्रंश शैली का प्रभाव पड़ा तत्पश्चात् मुगल प्रभाव भी देखने को मिला।

☛ विभिन्न चित्रकला शैली व संबंधित विद्वानों के गलत युग्म को पहचाने –

(1) मेवाड़ – मोतीचन्द्र, श्रीधर अंधारे, डॉ. आर के वशिष्ठ

(2) किशनगढ़ – एरिक डिक्शन, फैय्याज अली

(3) कोटा-बूंदी – प्रमोदचन्द्र, WG आर्चर, ब्रजेन्द्रसिंह

(4) सभी युग्म सही व सुमेलित है। (4)

व्याख्या–इन सबने संबंधित क्षेत्र व चित्रकला पर पुस्तकें लिखी है।

☛ राजस्थान चित्रकला का उद्गम माना जाता है?

(1) मारवाड़ (2) मेवाड़

(3) हाड़ौती (4) ढुंढाड़ (2)

व्याख्या–राजस्थान में चित्रकला का आरंभ मेवाड़ के महाराणा कुंभा के काल से हुआ इसलिए मेवाड़ को राजस्थान की चित्रकला की जन्मभूमि माना जाता है।

☛ किस चित्रकला शैली पर पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय का प्रभाव देखने को मिलता है?

(1) नाथद्वारा (2) उदयपुर

(3) जोधपुर (4) कोटा (1)

☛ राजस्थान से सम्बंधित चित्रकला को किसने सर्वप्रथम "राजस्थानी चित्रकला" नाम दिया?

(1) W.H. ब्राउन (2) O.C. गांगुली

(3) राय कृष्णदास (4) डॉ. फैयाज अली (3)

व्याख्या–राजस्थान चित्रकला का सबसे पहला वैज्ञानिक विभाजन आनंद कुमार स्वामी ने राजपूत पेंटिंग्स नामक पुस्तक में सन 1916 ई. में किया था। कुमार स्वामी, ओ.सी. गांगुली तथा हैवेल ने इसे 'राजपूत चित्रकला' कहा है। W.H. बनर्जी ने अपने ग्रंथ इंडियन पेंटिंग्स में इस प्रदेश की चित्रकला को 'राजपूत कला' नाम दिया। राय कृष्णदास ने इन मतों को खंडन कर इसे राजस्थानी चित्रकला नाम दिया।

☛ किस चित्रशैली को मारवाड़, जयपुर व मेवाड़ शैली का समन्वित रूप माना जाता है?

(1) देवगढ़ (2) नाथद्वारा

(3) उदयपुर (4) जोधपुर (1)

☛ राजस्थानी चित्रकला की शैलियों को भौगोलिक व सांस्कृतिक आधार पर कितने वर्गों में बाँटा गया?

(1) 5 (2) 4
(3) 7 (4) 11 (2)

व्याख्या–

1. **मेवाड़ शैली** – उदयपुर, चावंड, नाथद्वारा, देवगढ़, सावर, शाहपुरा, बनेड़ा, बागौर, बेगूँ, केलवा आदि।
2. **मारवाड़ शैली** – जोधपुर, बीकानेर, अजमेर, किशनगढ़, नागौर, सिरोही, जैसलमेर, घाणेराव, रियां, भिणाय, जूनियाँ आदि।
3. **हाड़ौती शैली** – कोटा, बूँदी, झालावाड़ आदि।
4. **ढूंढाड़ शैली** – जयपुर, आमेर, शेखावाटी, अलवर, उणियारा, झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा सामोद आदि।

☛ चावंड़ चित्रशैली की प्रसिद्ध कृति ढोलामारु (1592 ई.) किस शासक के समय की है?

(1) अमरसिंह के काल में
(2) राजसिंह के काल में
(3) महाराणा प्रताप के काल में
(4) उदयसिंह के काल में (3)

व्याख्या–महाराणा प्रताप के समय छप्पन की पहाड़ियों में स्थित राजधानी चावण्ड़ में चित्रकला का विकास हुआ। इस काल की प्रसिद्ध कृति ढ़ोला मारू (1592) है जो राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में स्थित है।

☛ मेवाड़ चित्रशैली का प्रमुख ग्रन्थ ''रागमाला'' किसने चित्रित किया?

(1) पंडित जगन्नाथ (2) निसारद्दीन
(3) सिराजुद्दीन (4) घासीराम (2)

व्याख्या–महाराणा अमर सिंह प्रथम के समय चावण्ड़ चित्रशैली का सर्वाधिक विकास हुआ। महाराणा अमरसिंह प्रथम के समय में रागमाला (1605 ई.) मेवाड़ शैली का प्रमुख ग्रंथ है। इन चित्रों को निसारद्दीन नामक चित्रकार ने चित्रित किया था।

☛ मेवाड़ के किस ठिकाणे के सामंत 'सौलहवें उमराव' कहलाते थे?

(1) उणियारा (2) शाहपुरा
(3) देवगढ़ (4) जोधपुरा (3)

व्याख्या–रावत द्वारिकादास चूँडावत ने 1680 में महाराणा जयसिंह के काल में देवगढ़ ठिकाणे की स्थापना की।

- यहाँ की चित्रशैली में प्राकृतिक परिवेश, शिकार के दृश्य, अन्तःपुर, राजसी ठाठ-बाठ, श्रृंगार, सवारी आदि के चित्र देखने को मिलते है।

परीक्षा दृष्टि

★ Master of Nature & Living Objects
उपनाम–देवकीनंदन शर्मा (अलवर)

★ खूबीराम, घासीराम, रेवाशंकर व पुरुषोत्तम चित्रकार–नाथद्वारा शैली।

★ **चित्रकला विकास की संस्थाएँ**–
चितेरा व धोरा–जोधपुर
कलावृत व आयाम–जयपुर
टखमण–28 व तुलिका कलाकार परिषद्–उदयपुर
पैग व क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप–जयपुर

★ खूबीराम, घासीराम, रेवाशंकर व पुरुषोत्तम चित्रकार–नाथद्वारा शैली

★ मारू गुर्जर कला एक प्राचीन राजस्थानी कला है, जो राजस्थान में छठी शताब्दी के प्रारम्भ में विकसित हुई, इसका शाब्दिक अर्थ है– **– राजस्थान व गुजरात की कला**

★ मेवाड़ चित्र कला शैली से संबंधित रचना है– **– गीत गोविंद**

★ 'निहालचंद' किसके दरबारी चित्रकार थे– **– सावंत सिंह**

★ चावण्ड शैली की चित्रकला किसके शासनकाल में प्रारम्भ हुई– **– प्रताप**

★ राजस्थान की प्रसिद्ध ब्ल्यू पॉटरी की हस्तकारी का उद्गम कहाँ से हुआ– **– पर्शिया (ईरान)**

★ थेवा कला का सम्बन्ध राजस्थान के किस जिले से है – **प्रतापगढ़**

★ 'चावण्ड शैली' की चित्रकला किसके शासनकाल में प्रारम्भ हुई– **– राणा प्रताप**

★ निहालचन्द किसके दरबारी चित्रकार थे– **– सावंत सिंह**

★ चित्रकला की किस शैली को प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. फैय्याज अली को है– **– किशनगढ़ शैली**

★ श्री अब्दुल गफूर खाँ, इम्तियाज अली तथा अब्दुल रजाक कुरैशी किस क्षेत्र में प्रसिद्ध है– **– पीतल पर खुदाई**

★ मण्डावा क्यों प्रसिद्ध है– **– भित्ति चित्र के कारण**

★ मेवाड़ चित्रशैली के प्रमुख चित्र 'रागमाला चित्र' किस अजायबघर में सुरक्षित है? **– दिल्ली के अजायबघर में**

★ राजस्थान चित्रकला की मूलशैली के रूप में किस चित्र शैली को माना जाता है– **– मेवाड़ शैली**

☛ उदय सिंह के काल में बने चित्रों में भागवत पुराण का ''परिजात अवतरण'' किसके द्वारा चित्रित किया गया?

(1) नानाराम (2) सिराजुद्दीन
(3) साहबदीन (4) निसारद्दीन (1)

व्याख्या–उदयसिंह का शासनकाल 1535 ई. से 1572 ई. तक। परिजात अवतरण की रचना 1540 में की गई। 1423 ई. में देलवाड़ा में सुपासनाह चरियम पुस्तक लिखी।

- डगलस बैरेट एवं बेसिल ग्रे ने चौरपंचाशिखा शैली का उद्गम मेवाड़ में माना है।
- कलाओं के उत्थान की दृष्टि से कुंभा का काल मेवाड़ का स्वर्णिम युग माना जाता है।

☛ **कलीला-दमना है–**
(1) मेवाड़ चित्रशैली के पात्र
(2) अजमेर दरगाह में रखी देगो के नाम
(3) महाराणा जगत सिंह के दो दरबारी
(4) उपर्युक्त सभी (1)

☛ **मेवाड़ चित्रकला का स्वर्णकला किसके समय रहा?**
(1) जगत सिंह प्रथम (2) अमर सिंह
(3) महाराणा कुंभा (4) संग्राम सिंह (1)

व्याख्या–महाराजा जगत सिंह के समय प्रमुख चित्रकार साहबदीन व मनोहर थे।

☛ **चितेरों की ओवरी जिसे तस्वीरा रो कारखानों भी कहा जाता है, की स्थापना किस महाराणा ने करवाई?**
(1) उदयसिंह (2) जगत सिंह प्रथम
(3) महाराणा कुंभा (4) महाराणा प्रताप (2)

☛ **गीत गोविन्द, बिहारी सतसई, सुंदर श्रृंगार, मुल्ला दो प्याजा के लतीफे, कलीला दमना ग्रंथों पर आधारित चित्र किसके शासनकाल के हैं?**
(1) महाराणा प्रताप (2) महाराणा राजसिंह
(3) संग्राम सिंह द्वितीय (4) सांवत सिंह (3)

☛ **राजस्थानी चित्रकला की विशेषता है?**
(1) प्रकृति परिवेश का चित्रण
(2) लोक जीवन की भावनाओं का चित्रण
(3) भक्ति और श्रृंगार का चित्रण
(4) उपर्युक्त सभी (4)

☛ **स्त्रियों के चित्रों में मीनाकृत आँखें, सीधी लम्बी नाक तथा भरी हुई दोहरी चिबुक, ठिगना कद, किस चित्रशैली की विशेषता है?**
(1) मेवाड़ (2) मारवाड़
(3) हाड़ौती (4) ढूँढाड़ (1)

व्याख्या–रंग–लाल, पीले, हरे, नीले, सफेद। इनके अलावा गठीली मूँछो युक्त भरे चेहरे, विशाल नयन, खुले अधर, छोटी ग्रीवा, छोटा कद, उदयपुरी पगड़ी, लम्बा साफा पुरूषों के चित्रों की विशेषता रहे है।

☛ **उदयपुर शैली एवं ब्रज शैली का समन्वित रूप है?**
(1) चावंड (2) देवगढ़
(3) नाथद्वारा (4) उणियारा (3)

व्याख्या–नाथद्वारा शैली की मौलिक देन श्रीनाथजी के स्वरूप के पीछे सज्जा के लिए बड़े आकार के कपड़े के पर्दे पर बनाये गये चित्र पिछवाईयों के नाम से जाना जाता है।

☛ **नाथद्वारा चित्रशैली की प्रमुख विशेषता किसके प्रभाव की रही?**
(1) कृष्ण लीला की
(2) शिकार के दृश्यों की
(3) पशु पक्षियों के चित्र की
(4) प्रकृति के मानवीकरण की (1)

व्याख्या–शिकार के दृश्यों के चित्र कोटा शैली, पशु पक्षियों के चित्र–बूँदी शैली। नाथद्वारा शैली में यशोदा, नन्द बाबा, बाल-ग्वाल, गोपियाँ, वल्लभ सम्प्रदाय के संतों आदि के चित्र देखने को मिलते है।

☛ **बगता, कंवला प्रथम, कुंवला द्वितीय, हरचंद नंगा, चोखा एवं बैजनाथ, आदि चित्रकारों का संबंध है?**
(1) बीकानेर शैली (2) देवगढ़ शैली
(3) जैसलमेर शैली (4) जयपुर शैली (2)

☛ **बाबा रामचंद्र, नारायण, चतुर्भुज, रामलिंग, चंपालाल, तुलसीराम आदि चित्रकारों का संबंध है–**
(1) देवगढ़ (2) नाथद्वारा
(3) जोधपुर (4) नागौर (2)

व्याख्या–नाथद्वारा चित्रकला शेली में कमला व इलायची नामक महिला चित्रकार भी थे।

☛ **नाथद्वारा चित्रशैली के बारे में सत्य कथन चुनिए–**
(1) कमला व इलायची प्रमुख महिला चित्रकार थे।
(2) कपड़े पर बनाये गये चित्र पिछवाइयों का संबंध इसी शैली से है।
(3) कदली वृक्षों की प्रधानता थी।
(4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–इस शैली में हरे-पीले रंगों की प्रधानता देखने को मिलती है। यहाँ गायों का मनोरम दृश्य, आसमान में देवताओं का अंकन, सघन वनस्पति आदि के चित्र भी देखने को मिलते है।

☛ **देवगढ़ चित्रशैली को सर्वप्रथम किसने प्रकाश में लाया?**
(1) एरिक डिक्सन (2) तेजसिंह
(3) श्रीधर अंधारे (4) नारायण (3)

☛ 'अजारा की ओवरी' 'मोतीमहल' किस चित्रशैली के भित्ति चित्र है?
(1) बीकानेर (2) उदयपुर
(3) जैसलमेर (4) देवगढ़ (4)

व्याख्या–इस शैली में पीले रंग की बहुलता थी।

☛ चोखेलाल महल एवं चित्रित उत्तराध्ययन सूत्र किस चित्रशैली के उदाहरण है?
(1) जोधपुर (2) जयपुर
(3) बीकानेर (4) नागौर (1)

व्याख्या–यह मारवाड़ शैली के अन्तर्गत आती है। सातवीं सदी में मारू देश में चित्रकार श्रृंगधर का उल्लेख तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ ने किया है।
- श्रृंगधर ने पश्चिमी भारत में यक्ष शैली को जन्म दिया।
- इसके प्रारंभिक चित्र ओध नियुक्ति वृति में भी मिलते है।

☛ महाराजा अभयसिंह नृत्य देखते हुए (1725 ई.) चित्र किस चित्रकार ने बनाया?
(1) बगता (2) कवत्ता
(3) डालचंद (4) शंकरदास (3)

व्याख्या–अभयसिंह के राज दरबार में चित्रकार थे। इसके चित्र मेहरानगढ़ संग्रहालय, जोधपुर व कुंवर संग्रामसिंह संग्रहालय जयपुर में सुरक्षित है।
- महाराजा मानसिंह (1803–1843) में मारवाड़ चित्रकला को चर्मोत्कर्ष पर पहुँचाया।
- मानसिंह के समय मारवाड़ चित्रशैली पर नाथ सम्प्रदाय का सर्वाधिक प्रभाव देखने को मिला।

☛ मारवाड़ के किस शासक के समय सम्भवतः सबसे अधिक सुन्दर व प्राणवान चित्र बने?
(1) मालदेव (2) अजीतसिंह
(3) जसवंत सिंह (4) मानसिंह (2)

व्याख्या–महाराजा जसवंतसिंह के समय कृष्ण चरित्र की विविधता व मुगल शैली का प्रभाव देखने को मिला।
- ध्यान रहे :- *दाना भाटी द्वारा बनाए चित्रों में मारवाड़ चित्रकला का चरमोत्कर्ष देखने को मिला।*

☛ मुमल-महेन्द्र, ढोला-मरवण, रूपमति - बाज बहादुर, कल्याण रागिनी आदि चित्र किस शैली में देखने को मिलते है?
(1) जोधपुर (2) किशनगढ़
(3) बीकानेर (4) कोटा (1)

व्याख्या–इस शैली की प्रमुख विशेषता प्रेमाख्यान चित्र रही।
- यहाँ लाल-पीले रंगों की प्रधानता देखने को मिली।
- विशेषता-
  - → पुरूष चित्र– लम्बे-चौड़ गठीले बदन, गल-मुच्छ, ऊँची पगड़ी, राजसी वैभव के वस्त्र आदि।
  - → महिला चित्र– ठेठ राजस्थानी लहंगा, ओढ़णी पर लाल फूंदनों का प्रयोग, बादाम सी आंखे।

☛ पाली के प्रसिद्ध वीर 'विट्ठलदास चम्पावत' के लिये 'रागमाला चित्रावली' किसने चित्रित की?
(1) वीर जी (2) दाना भाटी
(3) माधादास (4) शंकर भाटी (1)

व्याख्या–1623 में वीरजी ने इसे चित्रित किया।

☛ मारवाड़ में कला व संस्कृति को नवीन परिवेश देने का श्रेय किसे जाता है?
(1) राव जोधा (2) राव चन्द्रसेन
(3) राव मालदेव (4) राव उम्मेद सिंह (3)

☛ मारवाड़ चित्रशैली के चित्रकार थे?
(1) शिवदास भाटी व शंकरदास भाटी
(2) वीरजी, अमरदास भाटी व देवदास भाटी
(3) माधोदास, छज्जू भाटी व जीतमल
(4) उपर्युक्त सभी (4)

☛ बादाम सी आँखें व ऊँची पाग किस चित्रशैली की निजि देन है?
(1) बीकानेर शैली (2) देवगढ़ शैली
(3) जोधपुर शैली (4) नाथद्वारा शैली (3)

☛ किस चित्रशैली के चित्रों में खंजन पक्षी को बखूबी दर्शाया गया है?
(1) जोधपुर शैली (2) जयपुर शैली
(3) बीकानेर शैली (4) देवगढ़ शैली (1)

व्याख्या–रंग–लाल, पीला।

☛ किस चित्रशैली के विषयों का प्रधान विषय "प्रेमाख्यान" रहा?
(1) अलवर (2) किशनगढ़
(3) मारवाड़ (4) मेवाड़ (3)

☛ बीकानेर चित्रशैली का प्रादुर्भाव 16वीं सदी के अंत में माना जाता है किसके समय इस शैली के शुरूआती चित्र देखने को मिलते है?
(1) राव बीका (2) राव रायसिंह
(3) कल्याणमल (4) भारमल (2)

व्याख्या–"शुरूआती चित्र 'भागवत पुराण' के मिलते हैं।" महाराजा अनूपसिंह के समय बीकानेर शैली का विशुद्ध रूप देखने को मिलता है। इनके समय उस्ता परिवार में हिन्दू कथाओं, संस्कृत, हिन्दी व राजस्थानी काव्यों को आधार बनाकर सैंकड़ो चित्र बनाए।

☛ **उस्ता अली रजा व उस्ता हामीद रूकनुद्दीन, रामलाल किस चित्र शैली के चित्रकार थे?**

(1) जोधपुर (2) जयपुर
(3) बीकानेर (4) उदयपुर (3)

व्याख्या–मथैरण उस्ता कला संबंध इस चित्रशैली से है।

- स्वर्णकाल–अनूपसिंह।
- **बीकानेर शैली की विशेषताएँ -**
  - → तन्वंगी कोमल ललनाओ का अकंन, नीले, हरे, लाल, बैंगनी, जामुनी, स्लेटी रंगों का प्रयोग।
  - → शाहजहां व औरंगजेब शैली की पगड़ियों के साथ ऊँची मारवाड़ी पगड़ियां, ऊँट, हरिण, सारस मिथुन के चित्र, फव्वारों व दरबार के दृश्यो पर दक्षिण शैली का प्रभाव आदि।

☛ **"बणी-ठणी" का प्रसिद्ध चित्र किस चित्रशैली से संबंधित है?**

(1) कोटा (2) किशनगढ़
(3) मेवाड़ (4) देवगढ़ (2)

व्याख्या–बणी-ठणी गुर्जरी महिला थी जो सावंतसिंह की प्रेयसी थी। इसका चित्र मोरध्वज निहालचंद ने बनाया।

☛ **किशनगढ़ चित्र शैली का "स्वर्णकाल" किस शासक के समय रहा?**

(1) रायसिंह (2) सावंत सिंह
(3) मानसिंह (4) भारमल. (2)

व्याख्या–सावंत सिंह नागरीदास के उपनाम से प्रसिद्ध थे।

- **किशनगढ़ चित्रकला की प्रमुख विशेषताएं**-झील, हंस, बतख, सारस, तैरती नौकाएं, कैले के गाछ एवं रंग बिरंगे उपवन चांदीन रात में राधाकृष्ण की केलि क्रीड़ाएँ, बादलों का सिंदूरी चित्रण आदि।

☛ **पुरूषों में लम्बा इकहरा नील छवियुक्त शरीर, मोती जड़ित श्वेत मूंगिया, पगड़ी, उन्नत ललाट, खजंनाकृत कर्णान्त तक खींचे विशाल अरूणाभ नयन किस चित्रशैली की विशेषताएं है?**

(1) जोधपुर (2) किशनगढ़
(3) बीकानेर (4) कोटा (2)

व्याख्या–इसमें महिलाओं के चित्रों में तन्वंगी, लम्बी, गौरवर्ण, नुकीली चिबुक, सुराहीदार गर्दन, पतली कमर, लम्बी कमल पंखुड़ी सी आंखे विशेषताएँ रही है।

परीक्षा दृष्टि

★ नाथद्वारा शैली के पेंटिग्स को सामान्यत: कहा जाता है – **पिछवाई**
★ राजस्थान में भित्ति चित्रों को चिरकाल तक जीवित रखने के लिए आलेखन पद्धति है, जिसे कहते हैं– – **आरायश**
★ पिछवाइयों के चित्रण का मुख्य विषय है– – **श्रीकृष्ण लीला**
★ 'कमल से भरे सरोवर' कौनसी शैली का विषय है– – **किशनगढ़ शैली**
★ प्रसिद्ध चित्रकृति 'ढोला मारू' की शैली है– – **जोधपुर**
★ महा मारू शैली का प्रचलन किसके शासनकाल में हुआ– – **गुर्जर प्रतिहार के**
★ नूर मोहम्मद राजपूताने के किस राज्य का मुख्य चित्रकार था– – **कोटा**
★ प्रसिद्ध चित्र 'गीत गोविन्द' किस शैली का चित्र है– – **मेवाड़ शैली**
★ चावण्ड शैली के प्रसिद्ध चितेरे नसीरुद्दीन (नासरदी) ने 'रागमाला' का चित्रण किस शासक के संरक्षण में किया– – **अमरसिंह प्रथम**
★ 10वीं से 15वीं शताब्दी तक राजस्थान में प्रचलित चित्रकला शैली थी– – **अजन्ता**
★ कलीला-दमना है– – **मेवाड़ चित्र शैली की कहानी के दो पात्रों के नाम**
★ अलवर शैली में किसका चित्रण देखने को मिलता है– – **राजपूती, वैभव, कृष्णलीला और रामलीला, राग-रागिनी**
★ बनी-ठणी चित्रकारी सावंत सिंह (नागरीदास) के समय किसके द्वारा बनाई गई? – **मोरध्वज निहालचंद**
★ महाराजा रायसिंह के समय चित्रित 'भागवत पुराण' चित्र किस चित्रकला शैली का है? – **बीकानेर शैली**
★ जैसलमेरी शैली का कौनसा प्रमुख चित्र जैसलमेर के राज प्रासादों की प्रमुख शोभा था? – **मूमल**
★ शेखावाटी क्षेत्र किसलिए प्रसिद्ध है –**भित्ति चित्रकला हेतु**
★ महाराव उम्मेदसिंह के शासनकाल में निर्मित बूँदी चित्र शैली का उत्कृष्ट रूप है– – **चित्रशाला (रंगीन चित्र)**
★ ऑपन एयर आर्ट गैलेरी के लिए प्रसिद्ध –**शेखावाटी**
★ हाथीदांत पर चित्रण –**अलवर शैली (मूलचंद कलाकार)**

☛ **"बणी-ठणी" को भारत की मोनालिसा किसने कहा?**

(1) सावंत सिंह (2) निहालचंद
(3) एरिक डिक्शन (4) कर्नल जेम्स टॉड (3)

व्याख्या–"बणी-ठणी" पर 1973 ई. में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।

☛ राज परिवार पर वल्लभ सम्प्रदाय के प्रभाव के कारण चित्रकला पर भी राधा-कृष्ण लीला का प्रभाव देखने को मिला। यहाँ किस चित्रशैली के बारे में जिक्र हो रहा है?

(1) किशनगढ़ (2) अजमेर
(3) नागौर (4) जोधपुर (1)

व्याख्या–इस चित्रशैली के प्रमुख चित्रकार नानकराम, सीताराम, सूरध्वज, मूलराज, मोरध्वज, वदन सिंह, निहालचंद, रामनाथ लालडीदास।

☛ अल्लाबख्श, उस्ना व साहिबा (स्त्री चित्रकार) का सम्बन्ध किस चित्रशैली से था?

(1) जोधपुर (2) अजमेर
(3) नागौर (4) जयपुर (2)

व्याख्या–इस चित्रशैली में हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई धर्म को समान बताया है।

- अजमेर शैली के विकास व संवर्धन में भिणाय, सावर, मसूदा, जूनियां जैसे ठिकाणों का विशेष योगदान रहा।
- जूनियां का चांद, सावर का तैय्यब, नांद का रामसिंह भाटी, खरवा के जालजी व नारायण भाटी, मसूदा के माधोजी व राम का संबंध इसी शैली से रहा।

☛ सन् 1698 में 'राजा पाबूजी' का चित्र किसने बनाया?

(1) जूनियाँ के चाँद ने
(2) नाँद के रामसिंह भाटी
(3) मसूदा के माधोजी
(4) अजमेर के अल्लाबक्श (1)

☛ 'वृद्धावस्था' के कुशल चित्र व 'पारदर्शी' वेशभूषा किस चित्रकला शैली की विशेषता रही है?

(1) नागौर शैली (2) अजमेर शैली
(3) किशनगढ़ शैली (4) जैसलमेर शैली (1)

व्याख्या–नागौर उपशैली में लकड़ी के कवाड़ों व किले के भित्ति चित्रण में मारवाड़ शैली का प्रभाव देखने को मिलता है। इस उपशैली में बूझे हुए रंगों का प्रयोग किया जाता था।

☛ 'मूमल' किस चित्रशैली का चित्र है?

(1) जैसलमेर (2) अजमेर
(3) नागौर (4) जयपुर (1)

व्याख्या–इस चित्रकला शैली क विकास मुख्य रूप से महारावल हरराज, अखैसिंह व मूलराज के संरक्षण में हुआ।

परीक्षा दृष्टि

★ उस्ताद, कहलाने वाले चित्रकारों ने भित्ति चित्र किस नगर में बनाये हैं– – बीकानेर

★ किशनगढ़ चित्रशैली के कलाकार निहालचंद द्वारा बनाया गया विख्यात चित्र का नाम है– – बणी-ठणी

★ वर्षा में नाचता हुआ मोर किस शैली की विशेषता है – बूँदी शैली

★ कोटा शैली को आश्रय प्रदान किया– – रामसिंह ने

★ शरीर की ऊपरी चमड़ी को गोदकर उसमें काला रंग भरने की कला का नाम है– – गोदना

★ पंचतंत्र, गीत-गोविंद, रागमाला, रसमंजरी, रसिक प्रिया, महाभारत, रामायण आदि चित्र किस शैली के हैं– – मेवाड़ शैली

★ सवाई रामसिंह ने जयपुर में 'राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स' की स्थापना किस वर्ष की थी? – 1889 ई. में

★ 1625 में मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह प्रथम के समय रागमाला का चित्रकार कौन था? – निसारदीन

★ श्रीलाल जोशी, नंदकिशोर जोशी, प्रकाश जोशी, शांतिलाल जोशी राजस्थान की किस चित्रकला शैली के प्रसिद्ध कलाकार है – फड़ चित्रकारी शैली

★ जयपुर राज्य के कारखाने का नाम जहाँ कलाकार चित्र और लघु चित्र बनाते थे – सूरतखाना

★ निसारुद्दीन नामक चित्रकार का सम्बन्ध किस चित्रकला शैली से है– – मेवाड़ शैली

★ चित्रशाला संग्रहालय किस जिले में स्थित है– – बूँदी

☛ नारायण, छज्जू व कृपाराम के चित्रों ने जोधपुर के दक्षिण में गोड़वाड़ भूखण्ड में एक नवीन शैली को जन्म दिया, जिसे जाना गया –

(1) घाणेराव उपशैली (2) नागौर उपशैली
(3) किशनगढ़ शैली (4) हाड़ौती शैली (1)

व्याख्या–यह मारवाड़ की ही एक उपशैली है।

☛ भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध रंगमहल का निर्माण किसने करवाया?

(1) उम्मेद सिंह (2) दुर्जनसिंह
(3) छत्रसाल (4) मानसिंह (3)

व्याख्या–चित्रशाला का निर्माण उम्मेद सिंह के समय हुआ। राव उम्मेदसिंह का जंगली सूअर का शिकार करते हुए चित्र 1750 में बनाया गया।

☛ **कोटा के किस शासक को जंगली सूअर का शिकार करते हुए चित्र दर्शाया गया है?**

(1) उम्मेद सिंह (2) वदन सिंह
(3) माधोसिंह (4) छत्रसाल (1)

☛ **पशु पक्षियों तथा सतरंगी बादलों, जालशयों आदि को किस चित्रशैली की विशेषता है?**

(1) कोटा (2) बूँदी
(3) जोधपुर (4) उदयपुर (2)

व्याख्या–बूँदी के चित्रकार, सुरजन, अहमद अली, रामलाल, किशन, साधुराम।

☛ **आकाश में उमड़ते हुए काले कजरारे मेघ, बिजली की कौंध, घनघोर वर्षा, नदी में उठती जल तरंगे, हरे भरे वृक्ष और उन पर चहकती चिड़िया, नाचते मयूर चित्र किस चित्रशैली के चित्र हैं?**

(1) बूँदी (2) कोटा
(3) अजमेर (4) जयपुर (1)

व्याख्या–**बूंदी चित्रशैली की अन्य विशेषताएं**–राजपूती वैभव व सफेद, गुलाबी, लाल, हिगलू, हरा आदि रंगों का प्रयोग, राग रागिनी, नायिका भेद, ऋतु वर्णन, बारहमासा, कृष्णलीला, दरबार, शिकार हाथियों की लड़ाई आदि के चित्र।

☛ **कोटा चित्रशैली का चरमोत्कर्ष किस शासक के समय देखने को मिलता है?**

(1) सुर्जनसिंह (2) उम्मेदसिंह
(3) रामसिंह (4) छत्रशाल (2)

व्याख्या–**ध्यान रहे**–*महाराव भीमसिंह के समय कोटा चित्रशैली पर श्रीकृष्ण भक्ति व वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव देखने को मिला।*

- कोटा के मुसव्विरखाने के कलाकारों ने बड़े भित्ति चित्र व बड़ी-बड़ी वसलियों के शिकार चित्र बनाए।
- **प्रमुख चित्रकार** - रघुनाथ, गोविंदराम, डालू, लच्छीराम, नूर मोहम्मद आदि।

☛ **रघुनाथ, गोविन्दराम, डालू, लच्छीराम व नूर मोहम्मद प्रमुख चित्रकार किस चित्रशैली के हैं?**

(1) बूँदी (2) अजमेर
(3) कोटा (4) नागौर (3)

व्याख्या–कोटा चित्रशैली का स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करने का श्रेय शासक रामसिंह को जाता है। रानियों व नारियों के शिकार के दृश्य।

☛ **निम्न में से कौनसी कोटा शैली की विशेषता नहीं है?**

(1) महिलाओं के चित्रों में पीन अधर, सुदीर्घ नासिका, पतली कमर, कपोल खिले हुए, सुन्दर अलकावलि नारी आकृति को जीवतंता प्रदान करती विशेषता।
(2) पुरूषों के चित्रों में 'वृषभ कंधे, उन्नत भोहे, मासंल देह, मुख पर भरी-भरी दाढ़ी और मूंछे, तलवार, कटार आदि हथियारों से युक्त वेशभूषा तथा मोती जड़ित आभूषण छवि देखने को मिलती है।
(3) कोटा शैली में हल्के पीले और नीले रंग का प्रयोग देखने को मिलता है।
(4) उपरोक्त सभी कोटा शैली की विशेषताएं है। (4)

☛ **किस चित्रशैली पर मुगल व जोधपुर शैली का प्रभाव नहीं था। यह एक एकदम स्थानीय शैली है?**

(1) जयपुर (2) जोधपुर
(3) जैसलमेर (4) उदयपुर (3)

☛ **आमेर चित्रशैली में 'रसिकप्रिया' और 'कृष्ण रूक्मणी वेलि' नामक ग्रंथ अपनी रानी चंदावती के लिए किस शासक ने चित्र बनवाये थे?**

(1) मिर्जा राजा जयसिंह (2) मानसिंह
(3) रायसिंह (4) कल्याण (1)

व्याख्या–आमेर में ही मिर्जा राजा जयसिंह ने गणेश पोल का निर्माण भी करवाया। ये चित्र 1639 में बनवाए। आमेर शैली के प्रारंभिक ग्रंथों में यशोधरा चरित्र का नाम प्रमुख है जिसे 1591 में चित्रित किया गया।

- इसी समय जयपुर के सूरतखाने में रज्मनामा (1588) की प्रति तैयार की गई। जिसमें 169 बड़े आकार के चित्र है।

☛ **चित्र सृजन का कारखाना, सूरतखाना आमेर से जयपुर किस शासक के समय आ गया–**

(1) मानसिंह (2) ईश्वर सिंह
(3) माधोसिंह (4) रामसिंह द्वितीय (2)

व्याख्या–जयपुर में 36 कारखानों की स्थापना सवाई जयसिंह ने किया।

- ये कारखाने सवाई जयसिंह प्रथम ने अपने राजचिह्नों, कोषो, रोजमर्रा की वस्तुओं, कला के खजाने, साज-सामान आदि को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने हेतु बनवाए। जिनमें से सूरतखाना भी एक है।
- सूरतखाने में चित्रकार चित्रों का निर्माण करते थे।

☛ जयपुर के किस शासक के समय चित्रकारों ने चित्रों में रंगों को न भरकर मोती, लाख तथा लकड़ी की मणियों को चिपकाकर रीतिकालीन अलकांरित मणिमुकुट प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया?

(1) सवाई जयसिंह (2) सवाई माधोसिंह प्रथम
(3) माधोसिंह द्वितीय (4) प्रताप सिंह (2)

व्याख्या–इनके समय गलता के मंदिरों, सिसोदिया रानी के महलों, चन्द्रमहल, पुण्डरीक की हवेली में कलात्मक भित्ति चित्रण हुआ।

- **ध्यान रहे** - *माधोसिंह व सवाई ईश्वरी सिंह के समय लाल चितेरा नामक प्रसिद्ध चित्रकार हुआ था।*

☛ साहिबराम व लालचंद चित्रकारों का संबंध किस चित्रशैली से है?

(1) जयपुर (2) जोधपुर
(3) उदयपुर (4) देवगढ़ (1)

व्याख्या–साहिबराम ने ईश्वर सिंह का आदमकद पोट्रेट चित्र बनाया।

- लालचंद ने जानवरों की लड़ाईयों के अनेक चित्र बनाए।
- **ध्यान रहे**– *बैराठ के मुगल गार्डन व मौजमाबाद के भित्ति चित्रों मुगल प्रभाव देखने को मिलता है।*

☛ 1857 में महाराजा आर्टस एण्ड क्रॉफ्ट्स की स्थापना किसने की?

(1) मानसिंह (2) रायसिंह
(3) रामसिंह द्वितीय (4) जयसिंह (3)

व्याख्या–वर्तमान में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस के नाम से जाना जाता है।

☛ सालिगराम, जमनादास, छोटेलाल बक्सराम, नंदराम आदि चित्रकार किस चित्रशैली से संबंधित है?

(1) जोधपुर (2) अलवर
(3) नागौर (4) अजमेर (2)

व्याख्या–**ध्यान रहे**- *महाराजा जयपुर प्रतापसिंह के समय 50 से अधिक चित्रकार सूरतखाना में चित्र बनाते थे। जिनमें गोपाल, हुकमा, चिमना, रामसेवक, सालिगराम, लक्ष्मण आदि प्रमुख थे।*

- प्रतापसिंह के समय राधाकृष्ण की लीलाओं, नायिका भेद, राग रागिनी, बारहमासा आदि चित्र प्रधान रूप से बने।

☛ चूने से तैयार पलस्तर को घोटकर भित्ति चित्रण करना कहलाता है?

(1) आराइश (2) आलागीला
(3) मोराकसी (4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–राजस्थान में सर्वप्रथम आलागीला पद्धति का प्रारंभ आमेर में हुआ।

☛ ईसरदा, सिवाड़, झिलाय, उणियारा, चौमूं, सामोद, मालपुरा, ठिकानों पर किस चित्रकला शैली का प्रभाव पड़ा?

(1) जोधपुर (2) उदयपुर
(3) जयपुर (4) कोटा (3)

☛ अलवर शैली सन् 1775 ई. में जयपुर से अलग होकर किसके समय में स्वतंत्र अस्तित्व में आयी –

(1) राव राजा प्रतापसिंह (2) बालक राव
(3) जयसिंह (4) मानसिंह (1)

व्याख्या–राव प्रतापसिंह के समय जयपुर के शिवकुमार व डालूराम कलाकार अलवर आए।

☛ राजगढ़ के महलों में शीशमहल का चित्रण किसके शासनकाल में हुआ?

(1) विजय सिंह (2) बख्तावर सिंह
(3) शिवकुमार (4) सालिगराम (2)

व्याख्या–बख्तावर सिंह के समय नाथो, जोगियो, फकीरो से जंगल में चर्चा करते हुए महाराज आदि के चित्र देखने को मिले।

☛ रामगोपाल, रामप्रसाद, जगमोहन, रामसहाय एवं नेपालिया किस चित्रशैली के चित्रकार थे?

(1) कोटा (2) बूँदी
(3) अलवर (4) नाथद्वारा (3)

व्याख्या–ये कलाकार महाराजा जयसिंह के काल में थे, जिन्होंने अंतिम समय तक अलवर शैली को जीवित रखा।

☛ वह शासक जिसका अलवर की चित्रकला के उत्कर्ष में वही ध्यान है, जो मुगल चित्रकला में अकबर का था।

(1) विनय सिंह (2) बख्तावर सिंह
(3) जयसिंह (4) बलवंतसिंह (1)

व्याख्या–विनयसिंह स्वयं बलदेव से चित्रकारी सीखते थे। 'गुलिस्ता' का सुलेखन व चित्रकारी इनके शासनकाल में हुई जिस पर उस समय एक लाख रूपये व्यय हुए। इसके चित्र बलदेव व गुलाब अली ने बनाए थे।

☛ किस शासक के समय अलवर चित्रशैली में कामकला पर आधारित सैंकड़ो चित्र बने?

(1) विनय सिंह (2) शिवदान सिंह
(3) मंगलसिंह (4) जयसिंह (2)

व्याख्या–'नफीरी वादन' इस समय का सुन्दर उदाहरण है।

☛ किसके समय मूलचंद व उदयराम ने विशेषतः हाथीदाँत के फलकों पर सूक्ष्म चित्रण किया?

(1) बख्तावर सिंह (2) जयसिंह

(3) विनय सिंह (4) मंगलसिंह (4)

व्याख्या–**ध्यान रहे**-*महाराजा बलवंतसिंह के समय सालिगराम, जमनादास, छोटेलाल, बक्साराम आदि ने पोथी चित्रो, लघु चित्रो व लिपटवाँ पटचित्रों का निर्माण किया।*

☛ निम्न में से कौनसा कथन असत्य है?

(1) अलवर चित्रशैली पर ईरानी, मुगल व जयपुर शैली का प्रभाव देखने को मिलता है।

(2) अलवर शैली में पुरूष मुखाकृति आम जैसी, स्त्रियों का कद ठिगना, उठी हुई वेणियां आदि देखने को मिले।

(3) वैश्याओं के चित्र व सुन्दर बेलबूंटो वाली वसलियो का निर्माण अलवर शैली की विशेषता रही।

(4) उपरोक्त सभी सत्य है। (4)

☛ धीमा, मीरबक्श, काशी, रामलखन, भीम आदि चित्रकार किस शैली से संबंधित रहे?

(1) अलवर शैली (2) कोटा शैली

(3) उणियारा शैली (4) जयपुर शैली (3)

व्याख्या–उणियारा शैली पर जयपुर व बूंदी का समन्वित प्रभाव दिखाई देता है।

- नरूका ठिकाणे के वंश ने इस शैली के विकास में मार्गदर्शन किया।
- महाराज सरदारसिंह ने उक्त कलाकारों को आश्रय दिया।
- मीरबक्श ने राम-सीता, लक्ष्मण व हनुमान का उत्कृष्ट चित्र बनाया।

☛ सांझी किस त्यौंहार से पूर्व श्राद्ध पक्ष में बनाए जाते हैं?

(1) दीपावली (2) होली

(3) दशहरा (4) रक्षा (3)

व्याख्या–"सांझी का संबंध पार्वती से है।"

☛ कुँवारी कन्या सफेद पुति दीवारों पर पंद्रह दिन लगातार गोबर से आकार उकेरती है, उसका पूजन करते हैं उसे कहते हैं?

(1) सांझी (2) संझुली

(3) सिंझी, सांझा (4) उपर्युक्त सभी (4)

व्याख्या–सांझी पूजा 15 दिनों तक चलती है।

☛ भित्ति चित्रों के कारण ओपन आर्ट गैलेरी किस चित्रशैली को कहा जाता है–

(1) शेखावाटी (2) मारवाड़

(3) मेवाड़ (4) हाड़ौती (1)

व्याख्या–19वीं से 20वीं सदी के मध्य इस कला को विशेष प्रोत्साहन मिला।

- नवलगढ़, रामगढ़, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़, मुकुन्दगढ़, मंडावा, बिसाऊ आदि इसके प्रमुख केन्द्र है।
- इनमें कत्थई, नीले व गुलाबी रंग की प्रधानता पाई जाती है।
- फ्रांस के नदीन ला प्रेस ने इनके संरक्षण संबंधी सराहनीय काम किये है।
- **प्रमुख विशेषताएँ** - बड़े-बड़े हाथी-घोड़े, मल्लयुद्ध, कुश्ती, दधिमंथन, गौदोहन, दैवी, मिथको, राक्षशो, कामकला, राग रागिनी, साधुसंत आदि के चित्र।

☛ सांझी रचना में 'संझया कोट' कौनसे दिन बनाये जाते है?

(1) तीसरे दिन

(2) पाँचवे दिन

(3) सांतवे दिन

(4) अंतिम पाँच दिन (4)

व्याख्या–सांझी चित्रण में कन्याएं गोबर से रेखाएं उकेर कर उसमें काँच, मोती, चूड़ी, कौड़ी, पत्थर आदि से चमकती-दमकती आकृतियां बनाती है। जो इस प्रकार होती है-

- **पहले दिन** - सूर्य, चन्द्रमा, तारे।
- **दूसरे दिन** - पाँच फूल।
- **तीसरे दिन** - पंखी
- **चौथे दिन** - हाथी सवार
- **पांचवे दिन** - चौपड़
- **छठे दिन** - स्वास्तिक
- **सातवें दिन** - घेवर
- **आठवें दिन** - ढोलक या नगाड़े
- **नवे दिन** - बन्दनवार
- **दसवें दिन** - खजूर का पेड़
- **अंतिम पाँच दिन** - संझया कोट के बीचो-बीच बड़े आकार में सांझी माता व मानव, पशु-पक्षी आदि।

☛ ..... दीवारों को अलंकृत करने के लिए बनाये जाते हैं?

(1) सांझी (2) मांडना

(3) फड़ (4) पाने (2)

व्याख्या–सामान्यत: घर की देहरी, चौखट, घड़ा रखने का स्थान, पूजन स्थल आदि पर मांडने जाते है।

- ये अलग-अलग अवसरों पर अलग-अलग बनाए जाते है। **जैसे**–
  - → **विवाह के अवसर पर** - स्वास्तिक, गणेशजी, लक्ष्मी जी के पैर आदि।
  - → **बच्चे के जन्म पर** - गलीचा, फूल, स्वास्तिक
  - → **रक्षाबंधन पर** - श्रवण कुमार
  - → **गणगौर पर** - गुणो (मिठाई), घेवर, लहरिया
  - → **तीज पर** - घेवर, लहरिया, बगीचा
  - → **तीर्थ यात्रा से लौटने पर** - पुष्कर मेड़ी, पथवारी आदि।
- इसमें ज्यामितिय शैली का मिश्रण देखने को मिलता है।

☛ **शाहपुरा कस्बे में छीपा जाति के जोशी चितेरो द्वारा पटचित्रण किया जाता है उसे कहते हैं?**

(1) फड़ (2) मांडणा
(3) साझी (4) पाने (1)

व्याख्या–प्रमुख चित्रकार–श्रीलाल जोशी

- फड़वाचन कार्य–भोपों के द्वारा किया जाता है।
- फड़ में देवी-देवताओं की जीवनी की भोपों द्वारा वांचा जाता है। इसमें रंगों की बड़ी महत्ता है।
  - → **देवता** - लाल रंग
  - → **देवियाँ** - नीला रंग
  - → **राक्षश** - काला रंग
  - → **साधू** -सफेद या पीला रंग
- **शौर्य व वीरता का प्रतीक** - सिंदूरी व लाल रंग

☛ **राजस्थान में सबसे प्रसिद्ध/लोकप्रिय फड़ किस लोकदेवता की है?**

(1) पाबुजी
(2) देवनारायण जी
(3) रामदेवजी
(4) हड़बूजी (1)

व्याख्या–पाबुजी की फड़ का वाचन रावणहत्या वाद्ययंत्र के साथ किया जाता है। जबकि सबसे लम्बी फड़ देवनारायण जी की है।

- **फड़ निर्माण** - सर्वप्रथम हाथकते दो सूती कपड़ों पर गेहूं या चावल से कलफ (कड़फ) लगाया जाता है। सतह तैयार होने पर घोटकर समतल किया जाता है। इसके बाद विभिन्न रंगों से चित्रण किया जाता ह। इसमें अंतिम रेखाएँ केवल काले रंग से की जाती है।

☛ **राजस्थान में विभिन्न उत्सवों और त्यौंहारों पर देवी देवताओं के कागज पर बने चित्र कहलाते हैं–**

(1) फड़ (2) पाने
(3) मांडणा (4) सांझी (2)

व्याख्या–सबसे कलात्मक पाना श्रीनाथजी का है, जिसमें चौबीस श्रंगारों का चित्रण होता है।

☛ **एक मंदिरनुमा काष्ठ कलाकृति है जिसमें कई द्वार बने होते हैं। सभी द्वारों या कपाटों पर चित्र अंकित रहते हैं कहलाता है–**

(1) कावड़ (2) पाने
(3) फड़ (4) गोदना (1)

व्याख्या–कावड़ बनाना चित्तौड़गढ़ जिले के बस्सी गाँव के खैरादियो का पुश्तैनी व्यवसाय है।

- कलाकार – मांगीलाल मिस्त्री।
- कावड़ लाल रंग से रंगी जाती है। इसके ऊपर फिर काले रंग से पौराणिक कथाओं का चित्रांकन करते है। इनमें महाभारत, रामायण, कृष्ण लीला आदि का विवरण होता है।

☛ **पशुओं के शरीर पर विभिन्न कलात्मक निशान दागना कहलाता है?**

(1) पाने (2) गोडलिया
(3) मेहंदी (4) गोदना (2)

व्याख्या–ये निशान चुराए गये पशुओं की शिनाख्त के अलावा सामान्य पहचान के लिए भी किये जाते। दागने की यह प्रक्रिया "अटेरना" कहलाती।

☛ **सोजत व मालवा किसके लिए प्रसिद्ध है?**

(1) पाने (2) गोंडलिया
(3) मेहंदी (4) मिठाई (3)

☛ **अन्न व दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएँ घी, दूध, दही आदि जिसमें रखे जाते हैं, कहलाता है?**

(1) गोदना (2) अड्डा
(3) कोठिया (4) कावड़ (3)

☛ **किसी तीखे औजार से शरीर के ऊपर की चमड़ी खोदकर उसमे काला रंग भरने से चमड़ी में पक्का निशान बन जाता है, वह कहलाता है–**

(1) गोदना (2) कोठिया
(3) व्हील (4) कठपुतली (1)

व्याख्या–'सार्या' का संबंध गोदना से है।

- स्त्रियों द्वारा आंखों को तीर के समान पैनी दर्शाने के लिये पलक के साथ 'सार्या' गुदवायी जाती है।

☛ बाँस की पतली-पतली खपच्चियों को धागे से बाँधकर घोड़े की लीद मिलाकर चिकनी मिट्टी से बनाई जाती है, कहलाता है?

(1) वील (2) कोठिया
(3) कठपुतली (4) सांझी (1)

व्याख्या–जैसलमेर जिले में ज्यादा बनाया जाता है।

- इसमें विभिन्न प्रकार की दैनिक वस्तुएँ व सामान रखा जाता है।

☛ कठपुतली कहाँ की प्रसिद्ध है?

(1) जयपुर (2) जोधपुर
(3) उदयपुर (4) चित्तौड़गढ़ (3)

☛ पिछवाई चित्रांकन कला किस चित्रशैली से संबंधित है?

(1) किशनगढ़ (2) बूँदी
(3) कोटा (4) नाथद्वारा (4)

☛ सिंहासन, बतीसी, पृथ्वीराज संयोगिता व अमरसिंह राठौड़ के खेल का प्रचलन है–

(1) वील (2) कठपुतली
(3) नृत्य (4) कोठे (2)

☛ 1956 में किस देश में आयोजित तृतीय अंतराष्ट्रीय कठपुतली समारोह में उदयपुर के भारतीय लोक कला मंडल के कलाकारों ने राजस्थान की इस कला में विश्व में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया–

(1) रूमानिया (2) अमेरिका
(3) कनाडा (4) भारत (1)

☛ पक्षियों को महत्व देने वाली चित्रशैली है?

(1) बूँदी शैली (2) चावंड शैली
(3) जयपुर शैली (4) देवगढ़ शैली (1)

☛ जयपुर राज्य के उस कारखाने का नाम बताइये जहाँ कलाकार चित्र और लघु चित्र बनाते थे?

(1) तोपखाना (2) सूरतखाना
(3) आर्सीद (4) जवाहरखाना (2)

राजस्थान की हर प्रतियोगी परीक्षा हेतु उपयोगी

❖ राजस्थान सामान्य ज्ञान के नोट्स डाउनलोड करने के लिए नीचे दिए गए इमेज पर क्लिक करें --

❖ राजस्थान की विभिन्न भर्ती परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण नोट्स Free डाउनलोड :-

❖ राजस्थान कला एवं संस्कृति, भूगोल, इतिहास सभी के नोट्स Free डाउनलोड करने का एकमात्र Google वेबसाइट :- *Rajasthanclasses.in*

Rajasthanclasses.in

हर भर्ती की न्यूज सबसे पहले..

यहां उपलब्ध रहेगी 👇👇

Latest News : Get Link

अन्य किसी भी प्रकार की PDF's के लिए

गूगल सर्च करें या क्लिक करें 👇

Google

rajasthanclasses.in

Telegram चैनल ज्वॉइन करें

YouTube पर ऑनलाइन क्लासेज भी देखें

Click Here : Get More PDF